प्रथम ज्योति महाकाली प्रगटली।

(महाकाली)

ॐ निरन्जन निराकार अवगत पुरुष तत सार, तत सार मध्ये ज्योत ज्योत मध्ये परम ज्योत, परम ज्योत मध्ये उत्पन्न भई, माता शम्भु शिवानी काली, ओ काली काली महाकाली, कृष्ण वर्णी, शव वाहनी, रुद्र की पोषणी, हाथ खप्पर खडंग धारी, गले मुण्डमाल हंस मुखी। जिह्वा ज्वाला दन्त काली। मद्य मांस कारी श्मशान की रानी। मांस खाये रक्त-पी-पीवे। भस्मन्ति माई जहाँ पर पाई तहाँ लगाई। सत की नाती धर्म की बेटी इन्द्र की साली काल की काली जोग की जोगिन, नागों की नागिन मन माने तो संग रमाई नही तो श्मशान फिरे अकेली चार वीर अष्ट भैरी, घोर काली अघोर काली अजर बजर अमर काली भख जून निर्भय काली बला भख, दुष्ट को भख, काल भख पापी पाखण्डी का भख जती सती को रख, ओं काली तुम बाला ना वृद्धा, देव न दानव, नर या नारी देवीजी तुम तो हो परब्रह्मा काली।

क्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं दक्षिणे हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं क्रीं स्वाहा,

द्वितीय ज्योति तारा त्रिकुटा तोतला प्रगटी।

(तारा)

ऊँ आदि योग अनादि माया जहाँ पर ब्रह्माण्ड उत्पन्न भया। ब्रह्माण्ड समाया आकाश मण्डल तारा त्रिकुटा तोतला माता तीनो बसै ब्रह्म कपालि, जहाँ पर ब्रह्मा विष्णु महेश उत्पत्ति, सूरज मुख तपे चंद्र मुख अमिरस पीवे, अग्नि मुख जले, आद कुंवारी हाथ खड्ग गल मुण्ड माल, मुर्दा मार ऊपर खड़ी देवी तारा। नीली काया पीली जटा, काली दन्त जिह्वा दबाया। घोर तारा अघोर तारा, दूध पूत का भण्डार भरा। पंच मुख करे हा हा ऽःऽःकारा, डांकनी शाकिनी भूत पलिता सौ सौ कोस दूर भगाया। चण्डी तारा फिरे ब्रह्माण्डी तुम तो हो तीन लोक की जननी।

ऊँ ह्रीं श्रीं फट्, ओं ऐं ह्रीं श्रीं हूँ फट्।

तृतीय ज्योति त्रिपुर सुन्दरी प्रगटी।

(षोडशी-त्रिपुर सुन्दरी)

ऊँ निरन्जन निराकार अवधू मूल द्वार में बन्ध लगाई पवन पलटे गगन समाई, ज्योति मध्ये ज्योत ले स्थिर हो भई ऊँ मध्याः उत्पन्न भई उग्र त्रिपुरा सुन्दरी शक्ति आवो शिवघर बैठो, मन उन्मन, बुध सिद्ध चित्त में भया नाद। तीनों एक त्रिपुर सुन्दरी भया प्रकाश। हाथ चाप शर धर एक हाथ अंकुश। त्रिनेत्रा अभय मुद्रा योग भोग की मोक्षदायिनी। इडा पिंगला सुषम्ना देवी नागन जोगन त्रिपुर सुन्दरी। उग्र बाला, रुद्र बाला तीनों ब्रह्मपुरी में भया उजियाला। योगी के घर जोगन बाला, ब्रह्मा विष्णु शिव की माता।

श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौं ह्रीं श्रीं कं एईल

ह्रिं हंस कहल ह्रीं सकल ह्रीं सोः

ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं

चतुर्थ ज्योति भुवनेश्वरी प्रगटी।

(भुवनेश्वरी)

ऊँ आदि ज्योत आनादि ज्योत, ज्योत मध्ये परम ज्योत-परम ज्योत मध्ये शिव गायत्री भई उत्पन्न, ऊँ प्रातः समय उत्पन्न भई देवी भुवनेश्वरी। बाला सुन्दरी कर धर वर पाशांकुश अन्नपूर्णी दूधपूत बल दे बालका ऋद्धि सिद्धि भण्डार भरे, बालकाना बल दे जोगी को अमर काया। चौदह भुवन का राजपाट संभाला कटे रोग योगी का, दुष्ट को मुष्ट, काल कन्टक मार। योगी बनखण्ड वासा, सदा संग रहे भुवनेश्वरी माता।

ह्रीं

पंचम ज्योति छिन्नमस्ता प्रगटी।

(छिन्नमस्ता)

सत का धर्म सत की काया, ब्रह्म अग्नि में योग जमाया। काया तपाये जोगी (शिव गोरख) बैठा, नाभ कमल पर छिन्नमस्ता, चन्द्र सूर में उपजी सुषुम्नी देवी, त्रिकुटी महल में फिरे बाला सुन्दरी, तन का मुन्डा हाथ में लीन्हा, दाहिने हाथ में खप्पर धार्या। पी पी पीवे रक्त, बरसे त्रिकुट मस्तक पर अग्नि प्रजाली, श्वेत वर्णी मुक्त केशा कैंची धारी। देवी उमा की शक्ति छाया, प्रलयी खाये सृष्टि सारी। चण्डी, चण्डी फिरे ब्रह्माण्डी भख भख बाला भख दुष्ट को मुष्ठ जती, सती को रख, योगी घर जोगन बैठी, श्री शम्भुजती गोरखनाथ जी ने भाखी। छिन्नमस्ता जपो जाप, पाप कन्टन्ते आपो आप जो जोगी करे सुमिरण पाप पुण्य से न्यारा रहे। काल ना खाये।

श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं वज्र वैरो चनीये हूँ हूँ फट् स्वाहः।

षष्टम् ज्योति भैरवी प्रगटी।

(भैरवी)

ॐ सती भैरवी भैरो काल यम जाने यम भूपाल तीन नेत्र तारा त्रिकुटी, गले में माला मुण्डन की। अभय मुद्रा पीये रुधिर नाशवन्ती! काला खप्पर हाथ खन्जर, कालापीर धर्म धूप खेवन्ते वासना गई सातवे पाताल, सातवे पाताल मध्ये परमतत्व में जोत, जोत में परम जोत, परम जोत में भई उत्पन्न काल भैरवी, त्रिपुर भैरवी, समपत प्रदा भैरवी, कौलेश भैरवी, सिद्धा भैरवी, विध्वंसिनी भैरवी, चैतन्य भैरवी, कामेश्वरी भैरवी, षटकुटा भैरवी, नित्या भैरवी। जपा अजपा गोरक्ष जपन्ती यही मन्त्र मत्स्येन्द्रनाथ जी को सदा शिव ने कहायी। ऋद्ध फूरो सिद्ध फूरो सत श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी अनन्त कोटि सिद्धा ले उतरेगी काल के पार, भैरवी भैरवी खड़ी जिन शीश पर, दूर हाटे काल जन्जाल भैरवी मन्त्र बैकुण्ठ वासा। अमर लोक में हुवा निवासा।

"ॐ हस्त्रो हस्कलरो हस्त्रोः"

सपतम ज्योति धूमावती प्रगटी।

(धूमावती)

ॐ पाताल निरन्जन निराकार, आकाश मण्डल धुन्धुकार, आकाश दिशा से कौन आई, कौन रथ कौन असवार, आकाश दिशा से धूमावन्ती आई, काक ध्वजा का रथ अस्वार थरै धरत्री थरै आकाश, विधवा रुप लम्बे हाथ, लम्बी नाक कुटिल नेत्र दुष्टा स्वभाव, डमरु बाजे भद्रकाली, क्लेश कलह कालरात्रि। डंका डंकनी काल किट किटा हास्य करी। जीव रक्षन्ते जीव भक्षन्ते जाया जीया आकाश तेरा होये। धूमावन्तीपुरी में वास, न होती देवी न देव तहाँ न होती पूजा न पाती तहाँ न होती जात न जाती तब आये श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ आप भयी अतीत।

ॐ धूं: धूं: धूमावती फट् स्वाहः।

अष्टम ज्योति बगलामुखी प्रगटी।

(बगलामुखी)

ऊँ सौ सौ सुता समुन्दर टापू, टापू में थापा सिंहासन पीला। सिंहासन पीले ऊपर कौन बैसे सिंहासन पीला ऊपर बगलामुखी बैसे, बगलामुखी के कौन संगी कौन साथी। कच्ची बच्ची काक-कुतीया-स्वान चिड़िया, ऊँ बगला बाला हाथ मुग्दर मार, शत्रु हृदय पर स्वार तिसकी जीव्हा खिच्चै बाला। बगलामुखी मरणी करणी उच्चाटन धरणी, अनन्त कोटि

ऊँ ह्लीं ब्रह्मास्त्रायैं विद्महे स्तम्भनबाणायै

धीमहि तन्नो बगला प्रचोदयात्

दसवीं ज्योति कमला प्रगटी।

(कमला)

ऊँ अयोनी शंकर ऊँ कार रूप, कमला देवी सती पार्वती का स्वरुप। हाथ में सोने का कलश मुख से अभय मुद्रा। श्वेत वर्ण सेवा पूजा करे, नारद इन्द्रा। देवी देवत्या ने किया जय ओंकार। कमला देवी पूजो केशर पान सुपारी, चकमक चीनी फतरी तिल गुग्गल सहस्त्र कमलों का किया हवन। कहे गोरख, मन्त्र जपो जाप जपो ऋद्धि सिद्धि की पहचान गंगा गौरजा पार्वती जान। जिसकी तीन लोक मे भया मान। कमला देवी के चरण कमल को आदेश।

ऊँ ह्रिं क्लीं कमला देवी फट् स्वाहः

सुनो पार्वती हम मत्स्येन्द्र पूता, आदिनाथ नाती, हम शिव स्वरूप उलटी थापना थापी योगी का योग, दस विद्या शक्ति जानो, जिसका भेद शिव शंकर ही पायो। सिद्ध योग मरम जो जाने विरला तिसको प्रसन्न भयी महाकालिका। योगी योग नित्य करे प्रातः उसे वरद भुवनेश्वरी माता। सिद्धासन सिद्ध, भया श्मशानी तिसके संग बैठी बगलामुखी। जोगी खड दर्शन को कर जानी, खुल गया ताला ब्रह्माण्ड भैरवी। नाभी स्थाने उडीय्यान बांधी मनीपुर चक्र में बैठी, छिन्नमस्ता रानी। ऊँकार ध्यान लाग्या त्रिकुटी, प्रगटी तारा बाला सुन्दरी। पाताल जोगन (कुण्डलिनी) गगन को चढ़ी, जहाँ पर बैठी त्रिपुर सुन्दरी। आलस मोड़े, निन्द्रा तोड़े तिसकी रक्षा देवी धूमावन्ती करें। हंसा जाये दसवें द्वारे देवी मातंगी का आवागमन खोजे। जो कमला देवी की धूनी चेताये तिसकी ऋद्धि सिद्धि से भण्डार भरे। जो दशविद्या का सुमिरण करे। पाप पुण्य से न्यारा रहे। योग अभ्यास से भये सिद्धा आवागमन निवारे। मन्त्र पढ़े सो नर अमर लोक में जायें। इतना दस महाविद्या मन्त्र जाप सम्पूर्ण भया। अनन्त कोट सिद्धों में, गोदावरी त्र्यम्बक क्षेत्र अनुपान शिला, अवलगढ़ पर्वत पर बैठ श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी ने पढ़ कथ कर सुनाया श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।